

දෙවනවය විශ්වාස කිරීම හා ජරනිකෂෙප කිරීම අතර
තොරා ගැනීමේ නිදහස මැනුම්කරු මැවීමවලට නියම
කර ඇතේ ඇයි?

"आप कह दें कि यह तुम्हारे पालनहार की ओर से यह सत्य है। जो चाहे ईमान लाए एवं जो चाहे
इनकार कर दे।" [28] [सूरा अल-कहफ़ : 29]

सृष्टिकर्ता के लिए यह संभव था कि वह हमें अपने आज्ञापालन एवं इबादत पर मजबूर कर देता,
लेकिन मजबूर करने से इन्सान की रचना का अपेक्षित उद्देश्य पूरा नहीं होता।

अल्लाह की हिक्मत आदम को पैदा करने और उसे ज्ञान प्रदान करने के माध्यम से प्रदर्शित हुई।

"और उसने आदम को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन्हें फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि
मुझे इनके नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो।" [29] फिर उन्हें विकल्प को चुनने की क्षमता प्रदान की
गई।

[सूरा अल-बकरा : 31]

"और हमने कहा : ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इसमें से जिस स्थान से चाहो,
मन के मुताबिक खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।"
[30] फिर उनके लिए तौबा और अल्लाह की ओर लौटने का दरवाज़ा खुला रखा गया, यह देखते हुए
कि विकल्प अवश्य ही ग़लती, गुनाह एवं ग़लत रास्ते की ओर ले जाने का कारण बनेगा।

[सूरा अल-बकरा : 35]

"फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उसने उसे क्षमा कर दिया। वह बड़ा क्षमाशील
दयावान् है।" [31] अल्लाह ने आदम -अलैहिस्सलाम- को धरती पर अपना खलीफ़ा बनाना चाहा।

[सूरा अल-बकरा : 37]

"और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक खलीफ़ा बनाने
जा रहा हूँ। वे बोले : क्या तू उसमें उसे बनायेगा, जो उसमें उपद्रव करेगा तथा रक्त बहायेगा? जबकि
हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं! (अल्लाह) ने कहा : जो मैं जानता
हूँ, वह तुम नहीं जानते।" [32] इसलिए इच्छा और चुनने की क्षमता अपने आप में एक वरदान है,
अगर इसका सही और सच्चे मार्ग में उपयोग किया जाए। जबकि यह एक अभिशाप है अगर बुरे
उद्देश्यों के लिए इसका इस्तेमाल किया जाए।

[सूरा अल-बकरा : 30]

ज़रूरी है कि इरादा एवं एख्तियार खतरों, फ़ितनों, संघर्ष एवं आत्मा के जिहाद से घिरे हों। यह इंसान

